Question Paper Code : 7640

M.A. (Semester-IV) Examination, 2017

संस्कृतम

वर्ग-ग-दर्शन

पंचम प्रश्नपत्रम्

समय : घण्टात्रयम् पूर्णाङ्काः : 70

निर्देश : **पञ्चप्रश्नाः** समाधेयाः। **प्रथम** प्रश्नोऽनिवार्यःअस्ति। **प्रतिवर्गमेकः** प्रश्नोऽवश्यमेव समाधेयः।

1. संक्षिप्तटिप्पणयः लेखनीया- [3×10=30]

(क) किम् नाम योगः।

(ख) लौगाक्षि भाष्करः।

(ग) प्रमायाः स्वरूपम्।

(घ) विधिः।

(ङ) अभिनवगुप्तः।

(च) सदानन्दः।

http://www.lucknowstudy.com

(छ) समाधिः।

(ज) अष्टाङ्गानि योगस्य।

(झ) काश्मीर शैवदर्शनम्।

(ञ) सांख्यकारिका।

प्रथमो वर्गः

2. योगदर्शनस्य प्रतिपाद्यं प्रस्तूयताम्। [10]

3. सांख्यानुसारेण पुरुषस्वरूपं निरूप्यताम्। [10]

द्वितीयो वर्गः

4. "सर्वं खल्वमिदं ब्रह्म" निरूपणीयम्। [10]

5. वेदान्तसारस्य किमस्ति प्रतिपाद्यम्। [10]

तृतीयो वर्गः

6. हिन्दी भाषया अनुवादो कार्यः - [10]

योग युक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः।
सर्वभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।
ब्रह्मण्याकर्माणि संङ्गत्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्र मिवाम्भसा

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थमनोगतान्।
आत्मन्येवात्मनातुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।
दुःखेष्वनु द्विग्नाः सुखेसु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।

7. हिन्दी भाषया अनुवादो विधेयः - [10]

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति।
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यकर्तुमर्हसि।
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनु वर्तते।

चतुर्थो वर्गः

8. संस्कृतेन अनुवादो विधेयः - [10]

साधक का अभिषेक मुमुक्षु की सवीज और निर्वीज दोनों प्रकार की दीक्षाओं का प्रयोजन मोक्ष है। उनमें आचार्य की दीक्षा सवीज होती है। मुमुक्षु की साधक दीक्षा भी सवीज होती है। सवीज दीक्षा होने पर ही अभिषेक हो सकता है। केवल सवीज दीक्षा ही परमेश्वर

http://www.lucknowstudy.com

के साथ योजन कराने वाली है। उसके बाद योगसिद्धि के लिए सदाशिव अर्थात् परमेश्वर के सकल रूप में योजन होता है।

9. संस्कृतेन अनुवादो विधेयः - [10]

जिस प्रकार भारतीय विचारक वेदों को अनादि मानते हैं। उसी प्रकार शैवाचार्य भी शैवागमों की उत्पत्ति को अनादि काल से मानते हैं। समय के साथ केवल उनके लोक प्रकाशन का आर्विभाव और तिरोभाव होता रहता है। उपदेशकों की परम्परा में अवरोध उत्पन्न हो जाने पर संसार में शैव शास्त्रों का प्रचार एवं प्रसार रुक गया। जिसके फलस्वरूप लोग अज्ञानान्धकार में भ्रमित होकर विचलित होने लगे।

----- X-----

http://www.lucknowstudy.com